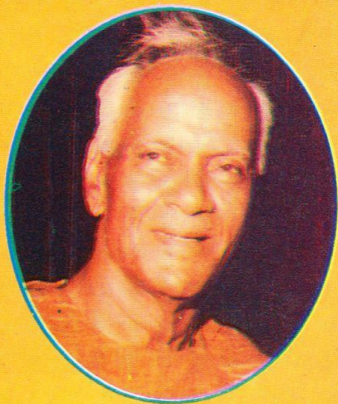


7728

7728

१२१



वेदमूर्ति, तपोनिष्ठ पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

**आर्थिक चिंताओं का
समाधान**

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

YUG NIRMAN YOJANA, GAYATRI TAPOBHUMI
MATHURA, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

गुरुदेव के विपुल साहित्य के कुछ चुभते अंश

अपव्ययिता में क्षणिक हर्ष अथवा प्रसन्नता के पीछे दुखों की एक ऐसी परंपरा लगी रहती है, जिसका अंत जीवन के अंत के साथ ही हो पाता है । इस लघु पुस्तिका में गुरुवर द्वारा मितव्ययिता के पक्ष में दिए गए महत्वपूर्ण सूत्रों का स्वाध्याय करें, मनन करें, प्रेरणा ग्रहण करें ।

दूरभाष : (०५६५)

—लीलापत शर्मा

४०४०१५/४०४०००

व्यवस्थापक

युग निर्माण योजना

मूल्य : १.५० रु०

पुस्तकालय तपोभूमि, मथुरा-३

पुस्तकालय
मथुरा

इस व्यस्त संसार में व्यग्रताओं का होना कोई आश्चर्यजनक बात नहीं है । व्यग्रता आती है, चिंताएं घेरती हैं—यह उतना हानिकारक नहीं है जितना कि उनको लेकर बैठ जाना और मस्तिष्क को मथने का अवसर देना ।

विद्वानों का कहना है कि जिस प्रकार ईंधन देने से आग बढ़ती है और ईंधन देना बंद कर देने से वह बुझ कर नष्ट हो जाती है; उसी प्रकार मनन करते रहने से चिंताएं बढ़ती हैं और उन पर अधिक विचार न करने से नष्ट हो जाती हैं ।

मानव मस्तिष्क में प्रायः अनेक प्रकार की चिंताएं अपना डेरा डाल लिया करती हैं जिनमें से निर्धनता की चिंता सबसे प्रमुख एवं असुखकर होती है ।

आर्थिक चिंताओं का समाधान / 9

निर्धनता के भय से चिंतित व्यक्ति सदा अपनी आय की अल्पता होना रोया करता है । उसे हर समय यही चिंता सताया करती है कि उसकी आमदनी कम है । उसके बच्चे बढ़िया खाना और बढ़िया कपड़े नहीं पाते । उसकी पत्नी के पास कीमती साड़ियां नहीं हैं, उसके अंग आभूषणों से रिक्त हैं । उसका मकान छोटा है । उसके पास रेडियो, बिजली, पंखा अथवा सोफासेट नहीं है । उसे साधारण चारपाइयों पर समान्य बिस्तर के साथ सोना पड़ता है । उसके पास इतना पैसा नहीं हो पाता जो वह अपने मित्रों को अच्छी दावत देकर अपना सम्मान बढ़ा सके, उन्हें सिनेमा दिखाकर अपनी उदारता का परिचय दे सके । उसके पास इतना धन नहीं बचता, जिससे वह बेटी की शादी किसी बड़े घर में

कर सके । उसकी आय कम है और वह एक निर्धन आदमी है ।

इस प्रकार न जाने कितने लोग अपनी ही रीति से अपनी निर्धनता एवं अल्प आय की चिंता व्यग्रता से रहा करते हैं और उसकी आग में अपनी मानसिक शांति के साथ स्वास्थ्य एवं शक्तियों को जलाया करते हैं । उन्हें न जाने यह समझ क्यों नहीं आती कि इस प्रकार अपनी निर्धनता की कल्पना करते रहने से क्या उनकी आय बढ़ सकेगी, निर्धनता दूर हो जाएगी ?

उन्हें समझना चाहिए कि वे ज्यों ज्यों अपनी निर्धनता की चिंता करते हैं त्यों त्यों वह बढ़ती हुई उन्हें और अधिक व्यग्र बनाती जाएगी । वे अधिकाधिक निराश होते जा रहे हैं, जिससे कि उनका उज्ज्वल भविष्य

अंधकार में डूबता जा रहा है । जब उनके मस्तिष्क में अपनी निर्धनता की चिंता शुरू हुई थी तब वे इतने हताश, निराश अथवा व्यग्र नहीं थे, जितने कि आज हो रहे हैं । उनकी चिंता ने आज जितना उग्र रूप धारण कर रखा है, प्रारंभ में उसका रूप इतना भयानक नहीं था । चिंता की इस विकट वृद्धि का यही कारण रहा है कि उसको मनन का ईंधन दे देकर स्वतः बढ़ाया गया है । यदि वे प्रारंभ में ही इस निकम्मी चिंता को अपने मस्तिष्क में प्रवेश न करने देते अथवा आ जाने पर उसे ईंधन न देते बल्कि उसे एक प्रेरणा समझकर आय बढ़ाने के उपायों में लग जाते तो निश्चय ही उनकी यह चिंता ग्रंथि बनकर उनके स्वभाव का अंग न बन पाती ।

अब भी कुछ विशेष बिगाड़ नहीं है, यदि

आपको इस प्रकार की चिंता सता रही है तो इसके पूर्व ही कि वह आपके स्वास्थ्य को सदा सर्वदा के लिए चौपट कर दे और आपके रहे सहे भविष्य को जलाकर फेंक दे, आप स्वयं ही उसे अपने मस्तिष्क से निकाल फेंकिए । चिंता का अचिन्तन, चिंता दूर करने का सबसे सरल एवं सफल उपाय है ।

यह बात सही है कि उत्तरदायी व्यक्ति के पास अनेक चिंताएं आ सकती हैं किंतु इसका अर्थ यह नहीं है कि आपके पास आई हुई चिंता इस बात की हकदार है कि आप उसे अपने चिंतन, समय तथा शांति का कुछ अंश अवश्य ही दें । मनुष्य के वास्तविक चिंताएं बहुत कम आती हैं और यदि वे आती हैं तो हर उत्तरदायी व्यक्ति उनका मनन करने के बजाय चिंता के कारण को दूर करने का

आर्थिक चिंताओं का समाधान / ५

प्रयत्न किया करता है । वह अपने मस्तिष्क को चिंता की शाखा प्रशाखाएं छोड़कर बेकार में न तो उलझाया करता है और न उसकी शक्ति क्षीण किया करता है । वह सीधे सीधे उसका हल निकालने में अपनी सारी शक्तियों को नियोजित किया करता है और ठीक तरह से, ठीक दिशा में शांत मस्तिष्क से सोचने पर उसका हल निकाल भी लेता है । बहुत करके तो निरर्थक एवं काल्पनिक चिंताएं ही अधिकतर मनुष्य को घेर लिया करती हैं ।

यदि आप अल्प आय के कारण निर्धनता के भय से व्यग्र हैं तो सबसे पहले इस बात की परीक्षा कीजिए कि कहीं आपकी यह चिंता आरोपित तो नहीं है । कहीं किसी पड़ोसी अथवा मित्र की स्थिति, उसका रहन सहन एवं जीवन स्तर देखकर स्पर्धावश वह चिंता

आपके मस्तिष्क में तो नहीं आई है । हो सकता है कि किसी दूसरे के बीबी, बच्चों, मकान तथा साधन सुविधाओं को देखकर आपके मस्तिष्क के किसी कोने में ईर्ष्या ने जन्म ले लिया हो और निर्धनता की यह चिंता उसी नागिन का विष हो । यदि ऐसा है तो निश्चय ही यह शर्म की बात है । यह सम्यता एवं सज्जनता के विरुद्ध व्यवहार है । ऐसी स्थिति में आपकी निर्धनता की चिंता-चिंता का विषय नहीं है, जितनी आपकी वह ईर्ष्या भावना जो किसी का रहन सहन देखकर उत्पन्न हुई है । जितनी जल्दी आप अपने मस्तिष्क से यदि ऐसा है तो इस ईर्ष्या को निकाल फेंकिए अन्यथा आप द्वेष, क्रोध, लोभ, मोह के ऐसे बबंडर में फंस जाएंगे कि सारा लोक परलोक ही तबाह हो जाएगा ।

आर्थिक चिंताओं का समाधान / ७

यदि आप में ईर्ष्या रूपी विष का प्रभाव नहीं हुआ है तो निश्चय ही आप साधारण जीवन एवं सामान्य रहन सहन की सुंदरता एवं सुख शांति को भूल गए हैं और विलासिता, प्रदर्शन तथा निरर्थक आवश्यकताओं की ओर झुक गए हैं जिससे आपको अपनी आय जो पहले कम नहीं मालूम देती थी अब कम मालूम होने लगी है और आप विलासिता की ओर उन्मुख होने लगे हैं । तो अपने सहज संतोष को अपने हाथों बर्बाद करके ऐसी संभावनाओं का बीजारोपण कर रहे हैं जिसका फल आपको इतना निर्धन बना देगा जितने निर्धन न आप पहले थे न अब हैं और न आगे होने की शंका है । निश्चय जानिए आपकी यह अंकुरित विलास वृत्ति आपको व्यसनी तक बना सकती है । इसलिए

८ / आर्थिक चिंताओं का समाधान

बुद्धिमानी इसी में है और कल्याण भी कि आप अपने सहज सुखदाता संतोष की रक्षा करें और अपने साधारण जीवन स्तर में सज्जनोचित दृष्टिकोण से सुन्दरता देखें ।

ईमानदारी से निरीक्षण कर लेने के बाद यदि आप अपने में इन दुर्बलताओं में से किसी को भी न पाएं तो देखिए कि आप परिश्रम कम तो नहीं करते हैं । आप अपनी योग्यताओं और क्षामताओं से अधिक तो नहीं चाहते । ईमानदारी से निर्णय कीजिए—यदि आपकी आय आपके परिश्रम तथा योग्यताओं के अनुरूप है तो आप अधिक की कामना करके अपने तथा समाज दोनों के साथ अन्याय करते हैं । चोरी न करने पर भी चोरी का इरादा रखना भी जिस प्रकार चोरी है उसी प्रकार योग्यता से अधिक चाहना भी एक

नैतिक अपराध है । आपकी आय यदि आपके उद्योग एवं योग्यता के समानान्तर है तो यह चिंता का विषय नहीं है । आपको उस पर संतोष करना ही चाहिए । उसके लिए चिन्तित होना किसी भी दशा में ठीक नहीं ।

अपने खर्च के एक एक बिन्दु पर बारीकी से नजर डालो । जहां अपव्यय की तनिक भी गंध आती हो वहां तुरंत कटौती-किफायत आरंभ कर दीजिए । अनावश्यक खर्चों को घटा देना, आमदनी बढ़ाने का सबसे सरल तथा तात्कालिक उपाय है ।

आय अल्पता की चिंता का एक कारण, अपने दायरे से आगे निकलकर सोचना भी है । यह उचित है कि लोग अपनी संतान को बहुत ऊंची शिक्षा दिलाना चाहते हैं । वे चाहते हैं कि उनकी संतान अधिक से अधिक उन्नत

एवं योग्य बने । समाज में प्रतिष्ठा एवं सम्मान प्राप्त करे । किंतु अल्प आय के कारण वे ऐसा कर सकने में अपने को विवश पाने से चिंतित होने लगते हैं । यदि आपने अपने दायरे से बाहर निकलकर बच्चों के लिए इस प्रकार की सद्भावनाओं को भावुकता से जोड़ दिया है तो निश्चय ही ये सद्भावनाएं आपका सर दर्द बन जाएंगी । अपनी सीमाओं तक उन्हें ऊंचा उठाने और पढ़ाने लिखाने में पूरे ईमानदार रहिए किंतु भावुकता में आकर उसे चिंता का विषय न बनाइए । इससे बनना तो कुछ नहीं, संतोषपूर्ण जिंदगी में कांटे ही उग आएंगे ।

सन्तान को ऊंची शिक्षा दिला सकना अथवा किसी बड़े पद पर पहुंचा सकना यदि आपके हाथ में नहीं है तो उन्हें अधिक से अधिक सच्चरित्र एवं सदाचारी बना सकना तो

आपके हाथ में है ही । इस विकास के लिए तो किसी पूंजी की जरूरत होती नहीं । उन्हें उपदेश, व्यवहार तथा अपने जीवन उदाहरण से अधिक से अधिक नैतिक एवं आचरणवान् बनाने का प्रयत्न कीजिए । यदि आप बुद्धिमत्तापूर्वक उन्हें एक उन्नतमना मनुष्य बना सके तो निश्चय ही आपने उन्हें एक बड़ा आदमी तो बना ही दिया साथ ही उनके लिए जीवन का ऐसा उत्तम पथ प्रशस्त कर दिया जो उन्नति की ओर ही जाता है । अल्पशिक्षित तथा सामान्य स्थिति में रहने वाले व्यक्ति में यदि चारु चरित्र की विशेषता विकसित हो गई तो वह अपनी स्थिति से ऊपर बढ़ेगा यह ध्रुव सत्य है । वह स्वयं बढ़ेगा और समाज न केवल उसे बढ़ने का अवसर ही देगा बल्कि सहायता भी करेगा नहीं तो सबसे ऊपर—

चारुचरित्रता अपने में स्वयं एक बड़ी बात है जो साधारण स्थिति में भी सम्मान एवं प्रतिष्ठा का पात्र बना देती है ।

पत्नी के लिए भूषण-वसन की चिंता करने के बजाय उसे प्रेम, आदर तथा एकात्मकता से प्रसन्न एवं परितुष्ट करिए । पति का सच्चा स्नेह पाई हुई पत्नियों को भूषण वसन की विशेषता की ओर कोई जिज्ञासा नहीं होती और पति का पूर्ण प्रेम तथा अखण्ड विश्वास पाकर वे साधारण वेश भूषा में भी दामिनी की तरह दमकती रहती हैं । निश्चल, प्रेमी एवं सच्चरित्र पति पाकर पावन पत्नियां आत्म संतुष्ट होकर पूर्णकाम हो जाती हैं । फिर वे संसार के अन्य वैभव के लिए लालायित नहीं होतीं ।

अपने साधारण घर में मानसिक उच्चता एवं स्वच्छता से रहिए । घर का वातावरण

प्रसन्न एवं पावन रखिए और देखिए आपको अपनी उस सामान्यता में ही संपन्नता के दर्शन होंगे । यह सब आपके अपने हाथ में है । इस सुख शांति के आप जन्मसिद्ध अधिकारी हैं । अपने अधिकार का उपयोग कीजिए, आपकी निर्धन भावना को दूर होते देर नहीं लगेगी और आपका सामान्य घर संपन्न स्वर्ग का एक कोना बन जाएगा ।

आर्थिक तंगी की समस्या और उसका समाधान :

पिछली पीढ़ियों में हमारे पूर्वजों की आजीविका आज की अपेक्षा बहुत कम थी तथा यातायात के साधनों के अभाव, यंत्रों के न होने तथा उत्पादन और संगठित अर्थ संस्थानों के बिना सीमित आमदनी में ही उन्हें गुजारा करना पड़ता था । फिर भी वे हमारी

अपेक्षा अधिक सुखी, संतुष्ट, स्वच्छ और प्रसन्न थे । इस शताब्दी में उद्योग, उत्पादन, श्रम, निर्माण एवं शासन का क्षेत्र बहुत अधिक बढ़ जाने से सबकी आजीविका बढ़ी है, जो साधन पूर्व पुरुषों को उपलब्ध नहीं थे वे हमें प्राप्त हैं । यह सब होते हुए भी हर कोई आर्थिक तंगी अनुभव करता है और इसी समस्या को सुलझाने के लिए निरंतर सचेष्ट एवं चिंतित रहता है ।

कारण यह है कि अब हर व्यक्ति अपनी आवश्यकताएं बढ़ाता चला जा रहा है । इस तथाकथित सभ्यता ने मनुष्य का मन विलासिता और आडम्बर की ओर मोड़ा है । सोचने का तरीका अब यह हो गया है कि जिसके पास जितने अधिक मंहगे तथा जितने अधिक सुखोपभोग के साधन होंगे वह उतना

ही बड़ा आदमी, उतना ही प्रतिष्ठित माना जाएगा, फलस्वरूप अपनी स्थिति और हैसियत का ध्यान न रखकर, आवश्यकता और उपयोगिता का ध्यान न रखकर इस प्रकार खर्च किया जाता है जो आमदनी की अपेक्षा अधिक हो जाता है। खर्च की कोई सीमा नहीं, किसी भी काम में चाहे जितना खर्च किया जा सकता है। आवश्यक एवं उपयोगी कार्यों की सीमा हो सकती है पर विलासिता और आडंबर का कहीं अंत नहीं। जितना चाहें उतना उनको खर्चा जा सकता है। आमदनी चाहे जितनी नहीं बढ़ सकती, ऐसी दशा में संतुलन का ध्यान जहां न रखा जाएगा वहां आर्थिक तंगी बनी ही रहेगी।

अनेकों ऐसे व्यक्ति मौजूद हैं जो अपनी आमदनी के अनुसार बजट बनाकर चलते हैं,

और संतोष एवं आनंद का जीवन व्यतीत करते हैं । मनुष्य की वास्तविक आवश्यकताएं बहुत सीमित हैं । हलका सादा सुपाच्य भोजन बहुत बहुत सस्ता होता है । गरिष्ठ, उत्तेजक, चटोरेपन के लिए बनाए हुए व्यंजन ही मंहगे पड़ते हैं । सस्ते, सादे भोजन से शरीर निरोग रहता है और मंहगे, गरिष्ठ व्यंजन आरोग्य की जड़ें खोखली करते हैं । नशीली चीजों की कोई उपयोगिता नहीं, उलट वे रक्त, मस्तिष्क और पाचन संस्थान को नष्ट करने वाली सिद्ध होती हैं । फिर भी बीड़ी, सिगरेट, चाय, पान, तमाखू आदि का खर्चा लोग शान और शौक समझकर गले बांधते हैं । कोई कोई तो भांग, गांजा, अफीम, शराब जैसी घातक वस्तुएं सेवन करके अपने धन और स्वास्थ्य की बर्बादी में लगे रहते हैं ।

शरीर ढकने, सर्दी से बचने और सज्जनों की तरह रहने के लिए हलके दाम के सादे वस्त्र पर्याप्त होते हैं। पर बन ठन कर निकलने में जिन्हें अपना बड़प्पन दीखता है उन छछोरे लोगों के लिए अनेक डिजायनों की अनेकों पोशाकों की जरूरत रहती है। नर और नारी इस मामले में एक दूसरे से होड़ लगाए रहते हैं। जो जितना बना ठना फिरता है वह अपने को उतना ही सभ्य और बड़ा समझता है। सजावट और शृंगार के उपकरणों की सहायता से लोग अपने को सुन्दर और सुसज्जित बनाने की उधेड़ बुन में लगे रहते हैं और ढेरों पैसा एवं समय इसी गोरख धंधे में नष्ट करते रहते हैं। इस प्रकार की बचकानी आदतें मनुष्य के ओछेपन को ही प्रकट करती हैं। संजीदा और समझदार आदमी हमेशा सादगी की वेशभूषा

अपनाए रहते हैं । ऊंचे विचार होने की बाह्य परीक्षा केवल सादा जीवन को देखकर ही की जा सकती है । जिसका सादा जीवन होगा उसी के मन में उच्च विचार टिके रह सकेंगे । सजधज में बहुत दिलचस्पी रखने वाले व्यक्ति, विचारशीलों की दृष्टि में बचकाने एवं ओछे ही समझे जाते हैं । घटिया लोग उनसे प्रभावित हो सकते हैं पर समझदारों के बीच उनका उपहास ही होता है । टीम टिमाक की बाल बुद्धि में उलझे रहने से उपहासास्पद बनना पड़ता है, स्तर गिरता है और खर्च बढ़ता है । ऐसी मूर्खता करते रहने से भला किसी का क्या हित हो सकता है ?

व्यसनों में होने वाली बर्बादी का कोई अंत नहीं । सिनेमा का शौक चरित्र पर, आंखों की रोशनी पर और आर्थिक स्थिति पर बहुत

बुरा असर डालता है । विदेशों में सिनेमा के द्वारा स्वास्थ्य, समाज शास्त्र, इतिहास, विज्ञान आदि की उपयोगी शिक्षाएं दी जाती हैं, पर भारत में कामुकता, अपराध अनीति एवं दुराचार के लिए दर्शकों की कोमल मनोवृत्तियों को भड़काने का ही काम अधिकांश फिल्में करती हैं । इनसे मनोरंजन थोड़ा और पतन अधिक होता है । नगरों में अब यह बीमारी बुरी तरह बढ़ रही है और बेचारे गरीब मजूर अपना पेट काट कर इन बेकार के व्यसनों में अपनी गाढ़ी कमाई के पैसे फूंकते रहते हैं ।

अपव्यय के अनेकों अन्य रास्ते हैं । पैसे की उपयोगिता, अपनी वास्तविक आवश्यकता की ओर यदि ध्यान न हो तो कितनी ही बड़ी आमदनी होने पर कमी ही अनुभव होगी, कर्जदारी तथा तंगी बनी रहेगी । वस्तुओं को

संभाल कर न रखने से वे जल्दी टूटती फूटती और बर्बाद होती हैं । लापरवाही हर जगह बर्बादी का कारण बनती है । वस्तुओं की ठीक तरह साज संभाल रखने से वे बहुत दिन चलती हैं । पर यदि उन्हें उपेक्षापूर्वक बरता जाए तो नष्ट होते देर नहीं लगती । बजट बनाकर चलने वाले, एक एक पैसे का हिसाब रखने वाले, मितव्ययिता से काम चलाने वाले थोड़ी आमदनी में भी काम चला लेते हैं और बर्बादी से बचाया हुआ पैसा जीवन को सुरक्षित बनाने वाले आवश्यक कार्यों में लगा कर प्रगति का मार्ग प्रशस्त करते रहते हैं । ऐसे लोगों को कभी तंगी की शिकायत नहीं करनी पड़ती ।

बुद्धिमत्ता कमाने में नहीं खर्च करने में परखी जाती है । आमदनी तो अनायास भी हो

सकती है, पैतृक उत्तराधिकार में प्राप्त होकर या परिस्थितियों के कारण बिना अधिक प्रयत्न के भी बहुत लाभ हो जाना संभव है, पर खर्च में सदुपयोग एवं औचित्य का ध्यान रखना केवल दूरदर्शी लोगों के लिए ही संभव होता है। जिन्हें मितव्ययिता का ध्यान है, जो केवल उचित आवश्यकताओं के लिए ही खर्च करने का ध्यान रखते हैं वे न तो कभी गरीब होते हैं और न ऋणी। ऐसे ही लोगों को संजीदा और समझदार कहा जा सकता है।

आलस्य और प्रमाद जहां रहेगा वहां दरिद्रता का ही आधिपत्य रहेगा। श्रम के प्रति सच्ची आस्था रखने वाले उत्साह, लगन और दिलचस्पी के साथ अपने कामों को करने वाले लोग जो भी काम करते हैं उसमें उन्हें सफलता मिलती है। श्रम से जी चुराने वाले,

आधे मन और उदासीनता के साथ बेगार भुगतने की तरह किए जाने वाले काम सदा अधूरे ही रहते हैं और उसमें असफलता की संभावना बनी रहती है । अमीर हो या गरीब जो श्रम करने से जी चुरावेगा, आलस में समय गंवाएगा उसे प्रगति की दौड़ में पिछड़ जाना पड़ेगा । अमीर या बड़े आदमियों की भी अपने कार्यों को, उत्तरदायित्वों को किसान और मजदूरों की तरह ही बड़ी मेहनत के साथ पूरा करना होता है । यदि वे उससे जी चुराने लगे, अपना अधिक समय गपशप और बेकार की बातों में गंवाने लगे तो उनकी आजीविका के साधनों पर निश्चय ही बुरा असर पड़ेगा और गरीबी एवं तंगी आ घरेगी ।

पुरुषार्थी और परिश्रमी लोग अपनी लगन एवं अध्यवसाय के आधार पर उन्नति के उच्च

शिखर तक जा पहुंचते हैं । पूरे परिश्रम और ईमानदारी से कमाया हुआ पैसा फलता फूलता और स्थाई उन्नति का आधार बनता है । अनीति और बेईमानी से जो कुछ कमाया गया है वह अनेकों उपद्रव खड़े करता है और अंततः शोक संताप देता हुआ विदा होता है । अनीति की कमाई करने वाले, जुआ, सट्टा, लाटरी आदि के माध्यम से बिना मेहनत किए घर भर लेने की योजना बनाते रहने वाले सदा दरिद्र ही बने रहेंगे । इन उपायों से भी किसी, किन्हीं को कुछ मिल भी गया तो उसका देर तक ठहर सकना किसी भी प्रकार संभव नहीं है । हराम की कौड़ी नाश की निशानी मानी गई है । जहां वह रहेंगी शांति का वातावरण वहां से दूर ही बना रहेगा । नकली, झूठी, मिलावटी, घटिया चीजों का

व्यापार करने वाले, कम तौलने और कम नापने वाले कभी खुशहाल नहीं रह सकते । चोर और उचक्रे बहुत कमाई करने पर भी खाली हाथ तंगदस्त ही रहते देखे गए हैं ।

आमदनी किन तरीकों से बढ़े इसके उपायों को लोग खोजते रहते हैं । इस संबंध में सबसे उपयोगी और सबसे महत्वपूर्ण उपाय यह है कि अपने गुण, कर्म और स्वभाव को इतना सुधारा और सज्जनतापूर्ण, सरल और सौम्य बना लिया जाए कि हर किसी का आकर्षण अपनी ओर हो । उदार और सहयोगी व्यवहार करने की इच्छा जागृत हो । संसार में जो भी आगे बढ़ा है उसे अपने साथी संबंधियों के स्नेह सहयोग का ही सबसे बड़ा लाभ मिला है । यह लाभ दुष्ट, दुर्गुणी, अशिष्ट और अव्यवस्थित लोगों को नहीं मिल सकता, इन

त्रुटियों के कारण सब लोग उनसे भीतर ही भीतर खिंचे रहते हैं । सहयोग का अवसर आने पर उपेक्षा बरतते हैं । ऐसी स्थिति में सुयोग्य लोगों को भी पिछड़ा पड़ा रहना होता है जब कि कम योग्यता के व्यक्ति अपनी सज्जनता के कारण आशाजनक जन सहयोग प्राप्त करके प्रगति पथ पर तेजी के साथ अग्रसर होते हैं । इस प्रगति में आर्थिक प्रगति भी सम्मिलित है ।

सज्जनता सघर्षो से बचाती है फलस्वरूप झंझटों में नष्ट होने वाला समय, श्रम और धन उस दिशा में लगा रह सकना संभव होता है, जिधर चलते हुए मनुष्य अग्रगामी बनता है । सीधे और सरल मार्ग पर चलने वाला चिंताओं और कठिनाइयों की परिस्थितियों में भी अपने चित्त को संतुलित बनाए रहता है फलस्वरूप,

मुसकान और प्रसन्नता उसके चेहरे का एक स्थाई अंग बन जाती है । आमतौर से जो लोग अपने को असंतुष्ट और चिंतित अनुभव करते हैं उन्हें ऐसे व्यक्ति के सान्निध्य और मार्गदर्शन की आवश्यकता बनी रहती है जो निश्चिंत, संतुष्ट और प्रसन्न रहता हो । ऐसे स्वभाव का व्यक्ति सर्वत्र आदर पाता है और उसके अनेकों मित्र सहज ही बन जाते हैं । मनुष्य का एक बहुत बड़ा सौभाग्य मित्रवान होना है । इस सौभाग्य को वे लोग सहज ही प्राप्त करते हैं जो अपने सद्गुणों के कारण कठिनाइयों की परवाह न करते हुए हंसते, मुस्कराते रहते हैं । गरीबी में भी मनुष्य हंसी खुशी का जीवन व्यतीत कर सकता है । चैन की रोटी खाने और सुख की नींद सोने में गरीबी कोई बहुत बाधा नहीं पहुंचाती । संतोषी की सुख शांति

आर्थिक चिंताओं का समाधान / २७

किसी के छीने नहीं छिनती ।

विश्वव्यापी आर्थिक तंगी की समस्या जिस विकराल रूप में आज मानव जाति के सामने प्रस्तुत है उसका समाधान करने के लिए आमदनी बढ़ाने के अगणित उपाय व्यक्तिगत और सामूहिक रूप से किए जा रहे हैं । उन उपायों में मानवीय सद्गुणों की अभिवृद्धि का एक महत्वपूर्ण लक्ष्य भी सम्मिलित किया जाना आवश्यक है । इसकी उपेक्षा करने से तंगी का प्रश्न ज्यों का त्यों बना रहेगा । दुर्गुणों की सुरसा के सामने बेचारी नियमित आजीविका सदा स्वल्प ही प्रतीत होती रहेगी ।

पारिवारिक बजट बनाकर खर्च कीजिए :

अपने सुख चैन की रक्षा के लिए, आर्थिक असुविधा एवं कर्जदारी से सदा सर्वदा

बचे रहने के लिए अपने पारिवारिक आय-व्ययक (बजट) को उचित रूप से मितव्ययिता के साथ बनाकर एक जिम्मेदार व्यक्ति की तरह जीवन यापन करना चाहिए । बजट बना लेने पर भी उसके अनुसार चलने में तब तक भी कठिनाई ही बनी रहेगी, जब तक मनुष्य उसके प्रति पूरी तरह ईमानदार नहीं रहेगा ।

मानिए, किसी ने अपनी सौ रुपए की आमदनी में से दस रुपए बचत की मद में निकाल कर बाकी नब्बे रुपए महीने के शुरू में ही खर्चों की विविध मदों में बांट कर बजट बना लिया, किंतु उसके अनुसार निष्ठापूर्वक चलता नहीं है, कभी इस मद का खर्च काट कर उस मद में बढ़ा दिया तो कभी उस मद का इस मद में, तो उसका बजट फेल हो

जाएगा और पारिवारिक व्यवस्था सुविधा संपन्न न रह सकेगी । जिस सरलता एवं स्निग्धता के लिए उसने बजट बनाया था, वह उद्देश्य पूरा न हो सकेगा । इसलिए बनाए हुए बजट के प्रति ईमानदार रहना बहुत आवश्यक है । जब तक बजट बन रहा है, तब तक ही उसमें हस्तक्षेप का अपना अधिकार समझिए । पर ज्योंही वह एक बार बनकर अंतिम रूप पा जाए, उसका उसी प्रकार पालन करिए, जिस प्रकार शासन विधान का पालन किया जाता है । निर्माण काल में बजट आपके अधीन रहता है, बन जाने के बाद आप स्वयं अपने आप को उसके मातहत समझिए ।

बजट एक प्रकार से पारिवारिक विधान ही है । इसका निर्माण यथासंभव परिवार के हर वालिग सदस्य को सम्मिलित करके ही

करना चाहिए और सर्वसम्मति से पास होना चाहिए । ऐसा संभव हो सकने पर न तो किसी को असंतोष का कारण ही रहेगा और न तब कोई उसका उल्लंघन करने को उद्यत होगा ।

प्रगतिशील एवं सुविचारी परिवार अधिकतर अपने बजट इसी प्रकार सर्व सदस्यता की विधि से ही बनाते हैं । इस व्यवहार से परिवार के सभी छोटे बड़ों में एक उत्तरदायित्वपूर्ण मितव्ययिता का स्वभाव विकसित होगा । परिवार की आर्थिक अवस्था का स्पष्ट ज्ञान रहने और उसके साथ अपनी जिम्मेदारी जुड़ी रहने से कोई भी सदस्य किसी खर्च की निश्चित सीमा से बाहर जाने में अपनी हीनता समझेगा । यदि कभी कोई नया प्रलोभन उसे लुभाएगा भी तो भी वह संकोचवश उसका प्रस्ताव किए बिना ही अपने

अंदर ही डुबा लेगा और अगले किन्हीं भी प्रलोभनों के प्रति अधिक से अधिक अनाकर्षित रहने में बड़प्पन समझेगा ।

इस प्रकार परिमित एवं सर्वसम्मत बजट बनाने और सुविधापूर्वक चलाने के लिए हर अपेक्षाकृत अधिक सयाने सदस्य को अपने से छोटे की सुख सुविधा का ध्यान रखते हुए प्रत्येक की परिस्थिति एवं आवश्यकताओं के अनुसार व्यय की व्यवस्था करनी चाहिए । ऐसा करने से परिवार के लोगों में एक दूसरे के लिए निःस्वार्थपूर्ण त्याग भावना का विकास होगा और जिसने निःस्वार्थपूर्ण त्याग भावना का सौभाग्य प्राप्त कर लिया उसके लिए तो सुख शांति कौड़ी मोल सस्ती हो जाती है ।

पुस्तकालय

युग निर्माण प्रेस

7728

मुद्रक : युग निर्माण प्रेस, मथुरा

अधिक जानकारी के लिए आज ही
स्वाध्याय का क्रम बनाकर आचरण करने के
प्रयास में जुट जाएं ।

१. जीवन साधना	८.००
२. व्यक्ति निर्माण	८.००
३. जीवन जीने की कला	६.००
४. अर्थानुशासन	६.००
	<hr/>
	२८.००

विस्तृत सूचीपत्र निःशुल्क मंगाने के लिए
स्थानीय युग साहित्य प्रचार केन्द्र अथवा युग
निर्माण योजना, मथुरा-३ से संपर्क करें ।

आत्मीय अनुरोध

इस पुस्तिका को अधिकाधिक व्यक्तियों तक पहुंचाने एवं पढ़ाने का प्रयास करें। इसे नववर्ष, दीपावली, होली आदि पर्वों तथा विवाह, जन्मदिन आदि मांगलिक अवसरों पर उपहार के रूप में देने के लिए अपने पास समुचित संख्या में मंगा कर रख लें। अन्य मंहगे व निरर्थक उपहारों की तुलना में यह छोटा-सा सस्ता उपहार लाख गुना महत्वपूर्ण एवं प्रेरणाप्रद सिद्ध होगा।

अपने संबंधियों एवं संपर्क क्षेत्र के सभी व्यक्तियों को भी अधिकाधिक संख्या में यह पुस्तिका मंगाने के लिए प्रोत्साहित करें।